International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भारत में नाथ सम्प्रदाय का उद्भव एवं विकास

अर्चना
शोधार्थी, राजनीति शास्त्र विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक (हरि0)

शोध आलेख सार– वस्तुतः भारत ऋषि–मुनियों, पैगम्बरों, योगियों आदि की परम्पराओं वाला देश रहा है। यदि नाथ सम्प्रदाय के सामाजिक व राजनीतिक योगदान पर चर्चा की जाये तो यह बात स्पष्ट होती है कि नाथ योगियों ने अपनी भारतीय परम्पराओं व संस्कृति का निर्वहन करते हुए समाज का भला किया है और आम जनमानस की श्रद्धा भी इस सम्प्रदाय के प्रति रही है। यदि वर्तमान सन्दर्भ में देखा जाये तो नाथ सम्प्रदाय के कई योगी राजनीतिक पटल पर अच्छे कार्य करते रहे हैं और कर रहे हैं। इसके साथ–साथ इस सम्प्रदाय के द्वारा कई शिक्षण संस्थाऐं व स्वास्थ्य केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं, जिनका सामाजिक दृष्टि से काफी महत्व है। बाबा मस्तनाथ मठ हरियाणा के साथ–साथ देश के अन्य क्षेत्रों के लिए भी एक अनूठा उदाहरण है, जो शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने के साथ–साथ सामाजिक हित के अन्य कार्यों में भी संलग्न है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत में नाथ सम्प्रदाय के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालता है।

मूलशब्द– नाथ सम्प्रदाय, भारतीय परम्परा व संस्कृति, सामाजिक योगदान, राजनीतिक योगदान।

भूमिका– भारत में नाथ सम्प्रदाय के उद्भव एवं विकास का अपना एक विशेष इतिहास है। वस्तुतः नाथ सम्प्रदाय भारत का परम प्राचीन, उदार, ऊँच–नीच की भावना से परे एवं अवधूत अथवा योगियों का सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय में योग साधना की कठिन प्रक्रियाओं के माध्यम से आध्यात्मिक क्षेत्र में अभ्युत्थान के अनूठे प्रयोग किये गए और सदियों तक सिद्धों के चमत्कारों से यह महादेश एवं पवित्र

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

धरती जगमगाती रही। वास्तव में नाथ योगियों ने अपनी सिद्ध विद्या के माध्यम से पीड़ित लोगों का हमेशा कल्याण किया और इन योगियों के प्रयासों से योग सम्प्रदाय भारत की सीमाओं को लांघकर अफगानिस्तान, तिब्बत तथा चीन तक फैल गया। इन योगियों ने सामाजिक कल्याण की दृष्टि से तथा स्व–उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हठ योग साधना, कर्म योग साधना तथा राष्ट्रप्रेम अराधना का सहारा लिया।

नाथ पंथ का उद्भव एवं विकास– भारत में नाथ पंथ की सनातन जीवनधारा आदिकाल से प्रवाहित होती आ रही है और नाथ शब्द का प्रयोग वैदिक युग में भी होता रहा है। प्राचीन भारत के इतिहास का विश्लेषण करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि परम् योगाचार्य एवम् महायोगी गुरू गोरखनाथ जी धार्मिक–सांस्कृतिक सन्धिकाल की एक महान विभूति हुये हैं। ऋग्वेद में नाथ शब्द का प्रयोग सृष्टिकर्त्ता, ज्ञाता तथा सृष्टि के निमित्त रूप में किया गया है। महायोगी गोरखनाथ जी द्वारा लिखित गोरखवाणी में नाथ शब्द का प्रयोग रचियता तथा परमतत्व के रूप में किया गया है। गोरखवाणी के अनुसार नाथमार्ग योगप्रधान मार्ग है और इसके अन्तर्गत वे सभी अनुयायी जन आते हैं जो नाथ सम्प्रदाय की मान्यताओं के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व आस्था रखते हैं। नाथ योग पंथ अपने उद्भव काल में कभी भी अवतारवाद का समर्थक नहीं रहा है। यहां यह बात कहना उचित है कि कालांतर में गोरखनाथ को आदिनाथ शिव का अवतार माना गया और नाथ योग के साधना केन्द्रों पर भगवान शिव के साथ अन्य देव मूर्तियों की उपासना की परम्परा का प्रचलन हुआ। इसके बाद संकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृति को छोड़कर नाथ योगियों ने शिव और विष्णु तथा हर एवं हरि में कोई अन्तर नहीं किया। परन्तु फिर भी नाथ पंथ की प्राचीन परम्पराओं के अनुसार महायोगी गोरखनाथ एक सर्वकालिक व्यक्तित्व एवं सन्त हैं तथा भारत में शंकराचार्य के बाद गोरखनाथ जैसा प्रभावशाली और युगप्रवर्तक व्यक्ति कोई अन्य नहीं हुआ।

नाथ शब्द की व्युत्पत्ति– न+अथ : नाथ, अर्थात् जिसका आदि ज्ञात नहीं, उसका अन्त भी अज्ञात है। नाथ दर्शन में योग सम्प्रदाय का इतिहास आदिकाल से प्रचलित माना जाता है। वैदिक युग में ऋग्वेद से पता चलता है कि यहां पर नाथ शब्द का प्रयोग 'नाथितासो' के रूप में हुआ है। यहां इस शब्द का अर्थ है – याचनीय देव की स्तुति करना। पाणिनी द्वारा लिखित अष्टाध्यायी पुस्तक में नाथ शब्द का अर्थ– विकास, याचना, प्रार्थना, स्तुति करना, दुःख से रक्षा करना, ईश्वर से ऐश्वर्य प्राप्त करना तथा आशीष प्राप्त करना है। वामन शिवराम आप्टे ने नाथ शब्द को पुल्लिंग संज्ञा मानकर इसे रक्षक, प्रभु, स्वामी आदि अर्थों का बोधक माना है। जैन धर्म में भी 24 तीर्थकरों की प्रचलित परम्परा में सभी के साथ नाथ शब्द जुड़ा हुआ है और ऋषभदेव को आदिनाथ माना गया है। इस बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि नाथ परम्परा के प्रथम प्रवर्तक का नाम भी आदिनाथ है। कई विद्वानों के अनुसार नाथपंथ एक आचार–विचार की पद्धति है और आधुनिक बुद्धिजीवियों ने इस शब्द का प्रयोग एक धार्मिक परम्परा के रूप में किया है। वास्तव में नाथपंथ एक सम्प्रदाय न होकर एक दार्शनिक पद्धति है, जिसको किसी वाद से बांधना सरासर गलत है। योगदर्शन की परम्परा में नाथ सम्प्रदाय का अपना विशेष महत्व है। गोरक्षसिद्धान्त संग्रह नामक पुस्तक में नाथ पंथ को कल्याण का मार्ग माना गया है तथा इसका भारतीय दार्शनिक चिन्तन परम्परा में काफी महत्व है।

चूंकि प्राचीन काल से चले आ रहे नाथ सम्प्रदाय को नाथ योगी मच्छेन्द्रनाथ तथा उनके शिष्य महायोगी गोरखनाथ ने व्यवस्थित रूप दिया, फिर भी इस परम्परा को आगे बढाने में अन्य नाथ योगियों का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा। नाथ सम्प्रदाय को संगठित करने में महायोगी गोरखनाथ की भूमिका सर्वविदित सत्य है। इनके प्रयासों से ही नाथ सम्प्रदाय की योग विधाओं को एकत्र किया गया। इस मत के अनुसार गुरू और शिष्य को तिब्बती बौद्ध धर्म में महासिद्धों के रूप में जाना जाता है। नाथ योगी विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने के बाद अपनी उम्र के अन्तिम पड़ाव

पर किसी एक जगह ठहर कर अखण्ड धूनी रमाते हैं तथा कुछ हिमालय क्षेत्र में ध्यानमुद्रा में लीन हो जाते हैं। प्रत्येक योगी के हाथ में एक चिमटा, कमण्डल, कान में कुण्डल, कमर में कमरबन्द, आदि होता है तथा जटाधारी साधु के रूप में ये योगी धूनी रमाकर ध्यान में लीन हो जाते हैं। इन योगियों को अवधूत या सिद्ध योगी कहा जाता है। ये योगी अपने गले में काली ऊन का एक जनेऊ पहनते हैं जिसे सिले कहा जाता है। इनके गले में एक सींग की नादी होती है। अतः इन दोनों को सींगी सेली कहा जाता है। इस पंथ के साधक लोग सात्विक भाव से भगवान शिव की अराधना में लीन रहते हैं और ये लोग अलख शब्द से शिव का ध्यान करते हैं। अलख और आदेश शब्द का प्रयोग करके ये अभिवादन करते हैं। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार नाथ योगी हठ साधना पर विशेष बल देते हैं।

नाथ सम्प्रदाय के इतिहास का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि भारत में 84 सिद्धों और 9 नाथ परम्परा का अपना विशेष महत्व है। इनके प्रारम्भिक 10 नाथों में आदिनाथ, आनन्दीनाथ, करालानाथ, विकरालानाथ, महाकालनाथ, कालभैरवनाथ, बटुकनाथ, भूतनाथ, वीरनाथ, और श्रीकांतनाथ प्रमुख हैं। इन नाथों के शिष्यों में नागार्जुन, जड़भारत, हरिशचन्द्र, सत्यनाथ, चरपटनाथ, अवधनाथ, वैराग्यनाथ, कान्ताधारीनाथ, जालन्धरनाथ, और मालयार्जुननाथ प्रमुख हैं। बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा की उत्पति होने के बाद 8वीं सदी में भारत में नाथ योगियों के 84 सिद्धों के प्रभाव से नई परम्परा शुरू हुई। ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार इन सिद्धों के रूप में वज्रयान शाखा का विकास हुआ। नाथ गुरू परम्परा में मच्छेन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालन्धरनाथ, नागेशनाथ, भारतीनाथ, चरपटनाथ, कनीफनाथ, गेहनीनाथ, तथा रेवननाथ 9 प्रमुख नाथ गुरू हुए हैं। इसके अलावा आदिनाथ, मीनानाथ, खपरनाथ, सतनाथ, बालकनाथ, गोलखनाथ, वीरूपक्षनाथ, भर्तृहरिनाथ, खेरचीनाथ, रामचन्द्रनाथ, ओंकारनाथ, उदयनाथ, संतोषनाथ, अचलनाथ, गजबेलीनाथ, चौरंगीनाथ, आदि भी नाथ योगी हुए हैं। बाबा शीलनाथ, दादा धूनीवाले, गजानन महाराज, गोगानाथ,

पण्डरीनाथ और सांईबाबा को भी नाथ परम्परा का माना जाता है। भगवान दतात्रेय को वैष्णव और शैव दोनों ही सम्प्रदाय से सम्बन्धित माना जाता है और उनकी गणना भी नाथ योगियों में होती है। देवों के देव महादेव शिव ने भी स्वयं को जोगी कहा है।

हठ प्रदीपिका के लेख और इस ग्रन्थ के प्रथम टीकाकार ब्रह्मनन्द ने 33 नाथ योगियों को सिद्ध योगी माना है और आदिनाथ को प्रथम योगीनाथ कहा है। नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ भगवान शिव हैं। तंत्र शास्त्र में जड़भरत, गोरखनाथ, मच्छेन्द्रनाथ, सत्यनाथ, जालन्धरनाथ आदि को प्रमुख नवनाथ कहा गया है। बौद्ध धर्म में भी 84 सिद्ध नाथ योगियों का उल्लेख है। हिन्दी साहित्य के कवियों ने भी नाथ परम्परा पर काफी कुछ लिखा है। अनेक विद्वानों के अनुसार भारत में नाथ परम्परा का इतिहास काफी प्राचीन है और यह सनातन धर्म का ही अभिन्न अंग है। इस परम्परा में अहिंसा, सत्य, क्षमा, दया, धैर्य, अस्तेय, सरलता, मिताहार, पवित्रता, संतोष, तप, दान, जप, ईश्वर पूजा, होम उच्चारण को प्रमुख माना गया है। इस दर्शन की प्रमुख पुस्तकें सब्दी, पद, शिष्यादर्शन, प्राण, सांकली, आत्मबोध, अभयमात्रा जोग, सप्तवार, रोमावली, ज्ञानतिलक, पंचगात्रा, दयाबोध, गोरखवचन, अष्टमुद्रा आदि महत्वपूर्ण हैं।

यद्यपि नाथ सम्पद्राय की उत्पति को लेकर भारत में विभिन्न धर्मों में भ्रम की स्थिति है। कुछ विद्वान इस सम्प्रदाय को बौद्ध धर्म का और जैन धर्म का पश्चातवर्ती मानते हैं। जबकि कई प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि यह सम्प्रदाय आदिनाथ भगवान शिव द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय है और योग साधना इस सम्प्रदाय का आदि और अंत है। वास्तव में इसे शैवमत पर आधारित सम्प्रदाय माना जाता है। इस पंथ में अखण्ड ब्रह्मचारी होना बहुत जरूरी है तथा मांस–मदिरा का सेवन निषेध है। चूंकि नाथ गुरूओं की संख्या के बारे में विभिन्न विद्वानों में मतभेद हैं, फिर भी गोरखनाथ द्वारा लिखित पुस्तक हठयोग तथा ज्ञानामृत, इसके प्रमाणित ग्रन्थ हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

हरियाणा में बाबा मस्तनाथ एक शिरोमणि सिद्ध योगीराज माने जाते हैं, जिनका जीवन चमत्कारों से परिपूर्ण है। इन्हें महायोगी गोरखनाथ जी का अवतार माना जाता है। इनके शिष्य श्रेयोनाथ अस्थल बोहर मठ के पद पर आसीन हुए और उन्होंने सामाजिक कल्याण के कार्यों में पूरा योगदान दिया। इसके अलावा वे हरियाणा विधानसभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए और उन्हें स्वास्थ्य मंत्री का पद मिला। इस मठ में चांदनाथ योगी ने अपने गुरू श्रेयोनाथ की परम्परा को आगे बढाया। चांदनाथ योगी भी अलवर से सांसद बने और कई सामाजिक व राजनैतिक कार्यक्रमों में बढचढ़ कर योगदान दिया। इस वर्ष चांदनाथ योगी की मृत्यु के बाद अस्थल बोहर के मठ पर बाबा बालकनाथ को गद्दी दी गई।

सारांश– यदि भारत में नाथ सम्प्रदाय के उद्भव एवं विकास का विश्लेषण किया जाये तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नाथ परम्परा सनातन धर्म से सम्बन्धित है। आज तक जितने भी नाथ योगी हुए हैं, उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कष्टों का निवारण किया और आम जनमानस ने भी अपनी अगाध श्रद्धा नाथ सम्प्रदाय के प्रति दिखलाई। नाथ परम्परा में गोरखनाथ एक ऐसे महान योगी हुए जिन्होंने समस्त भारत का भ्रमण किया और राजनीति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अभी हाल ही में उत्तरप्रदेश में गोरखपुर मठ के महन्त योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बने और वे बड़े जोश के साथ जनकल्याण में अपना योगदान दे रहे हैं।

सन्दर्भ सूची–

- नाथ सम्प्रदाय, **मुक्त ज्ञानकोष विकीपीडिया।**
- जगदीशचन्द्र जैन, **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज,** चौखम्बा प्रकाशन, वारणासी, 1965.
- परशुराम चतुर्वेदी, **उत्तरी भारत की संत परम्परा,** भारतीय भण्डार, आगरा, सम्वत 2009।

- भारतीय इतिहास संकलन समिति, **राष्ट्रीय संगोष्ठीः नाथ पंथ और भक्ति आन्दोलन**, 28–30 अक्तूबर 2010, गोरखपुर।
- योगिन्द्रनाथ योगी, ''गोरखनाथ ऊँ शिव गोरख योगी'', 3 अक्तूबर 2010.
- के. आर. नजुण्डन, ''नाथ सम्प्रदायः उद्भव एवं विकास'', **राष्ट्रीय संगोष्ठीः नाथ पंथ और भक्ति आन्दोलन**, 28–30 अक्तूबर 2010, गोरखपुर।
- गोरखनाथ संप्रदाय, **''**परम्पराओं के सदस्य'', संस्मरण, 4 जून 2014.